इकाई 4 सामाजिक परिवर्तन : अवधारणा और सामाजिक परिवर्तन से सम्बद्ध कारक

रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषाएँ

4.3 सामाजिक उन्नति और सामाजिक विकास की अवधारणा

4.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक

4.5 सामाजिक व्यवहार, सामाजिक मूल्य और सामाजिक परिवर्तन

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

- सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक उन्नति, सामाजिक विकास और सांस्कृतिक पिछड़ेपन की अवधारणा को जान सकेंगे;
- सामाजिक उन्नति और सामाजिक विकास के मध्य अन्तर को पहचान सकेंगे;
- सामाजिक परिवर्तन के कारकों को समझ सकेंगे;
- सामाजिक परिवर्तन को सार्वभौमिक और सतत् परिघटना के रूप में समझ सकेंगे;
- सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में सामाजिक परिवर्तन की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- मानव के दैनिक जीवन पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों की समीक्षा कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

'परिवर्तन' शब्द से तुरंत ही हमारे मस्तिष्क में कल या पूर्व की कुछ भिन्नता का इशारा करता है। परिवर्तन प्रकृति का अखंडनीय नियम है। यह कभी दिखाई देता है और कभी नहीं दिखाई देता है किन्तु सभी वस्तुएँ भिन्न–भिन्न गति से परिवर्तित होती हैं। परिवर्तन भौतिक वातावरण, वनस्पति और जीव जन्तुओं, जल स्तर जैसी सभी जगहों में होता रहता है। इसी प्रकार से, मानव निर्मित सामाजिक वातावरण में भी परिवर्तन की प्रक्रिया सतत् रूप से चल रही है। समाज के इतिहास पर निगाह डालें तो यह स्पष्ट होता है कि सभी सामाजिक संस्थानों जैसे परिवार, धर्म, विवाह, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक मूल्य और सामाजिक व्यवहार में समय के साथ तीव्र परिवर्तन हुए हैं। मानव द्वारा इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में व्यतीत किया जा रहा सामाजिक जीवन सौ या और वर्षों पहले बिताए गए जीवन से भिन्न है। मानव समाज का स्थायित्व एक भ्रम है। मानव समाज एक निरंतर

परिवर्तनशील प्रक्रिया है जो विकसित होती है, नष्ट होती है, नए विचारों खोज़ों (आविष्कारों) और जीवनयापन के तरीकों के साथ सामंजस्य बनाती है और नवनिर्मित होती है।

4.2 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषाएँ

आरंभ में, सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा का परिचय अगस्त काम्टे ने कराया था जो फ्राँसीसी थे और समाजशास्त्र के जनक माने जाते हैं। बाद में, सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा हरबर्ट स्पेंसर, कार्ल मार्क्स और बहुत से अन्य समाजशास्त्रियों द्वारा परिष्कृत और विकसित की गई। कोई भी मानव समाज स्थिर नहीं है और इस काल में सामाजिक परिवर्तन के प्रकारों और दिशा का अनुमान लगाना कठिन है। इसका कारण यह है कि सामाजिक परिवर्तन लाने वाले कारक हमेशा समान नहीं रहते। जनसंख्या परिवर्तित होती है, विज्ञान और तकनीक बढ़ती है, विचारधारा और सामाजिक मूल्य एक नया प्रकार ग्रहण कर लेते हैं और इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना, सामाजिक तंत्र और सामाजिक संस्थान अपने कार्य करने के तरीके बदल देते हैं। औद्योगीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया ने समस्त सामाजिक संबंधों को बदल दिया है। सामाजिक परिवर्तन 'शब्द' परिवर्तन को संकेत देता है जो कि मानव बातचीत एवं अन्तर संबंधों में होता है। समाज संबंधों का जाल है इसलिए सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक संबंधों की व्यवस्था में परिवर्तन से है। यह स्पष्ट दिखता है कि तात्कालिक संसार समान रूप से नहीं बदल रहा और साथ ही सामाजिक परिवर्तन में विभिन्न विषमताओं को प्रदर्शित करता है। सामाजिक परिवर्तन का धीमा और सरल प्रकार तीव्र और जटिल प्रकार से भी विभाजित हो सकता है। अशिक्षित व्यक्ति के सुदुर ग्रामीण क्षेत्र से महानगरों की तरफ पलायन से पारिवारिक जीवन की संस्थाएँ प्रभावित होंगी, जो शहरी जीवन की तेज़ रफ्तार की वज़ह होने वाले तनाव और कष्ट को बढ़ा देगा और औद्योगिक और शहरी जीवन के लिए नए सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता होंगी।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद से, बहुत सारे समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित करने के प्रयास किए हैं। सामाजिक परिवर्तन की कुछ परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं:

अगस्त काम्टे: समाज की उन्नति अनुमानित अवस्था के क्रम में होती है जो मानव ज्ञान के विकास पर आधारित होती है।

एन्डरसन और पारकर: सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक संरचना में बदलाव या सामाजिक प्रकारों या प्रक्रिया के कार्य करने के तरीके में स्वतः ही बदलाव समाहित होता है।

डेविस: सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य उन कुछ बदलावों से है जो सामाजिक संगठन में घटित होते हैं ये समाज की संरचना और कार्य हैं।

गिलिन और गिलिन: सामाजिक परिवर्तन जीवन की मान्य रीतियों से विचलन है; चाहे यह बदलाव भौगोलिक स्थितियों, सांस्कृतिक उपकरणों में या जनसंख्या की संरचना इत्यादि की वज़ह से हो।

जिन्सबर्ग: सामाजिक परिवर्तन से, मैं सामाजिक संरचना में परिवर्तन को समझता हूँ। उदाहरण समाज का आकार, उसके हिस्सों की संरचना या सामंजस्य या उसके संगठन का प्रकार।

कोनिंग: सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य उन संशोधनों से है जो लोगों की जीवन पद्धति में होते हैं।

लुन्डबर्ग और अन्य: सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य किसी भी संशोधन से है जो अन्तः मानवीय संबंधों और आचरण के मानकों की स्थापित पद्धति में होता है।

मैकाइवर और पेज: एक समाजशास्त्री के रूप में हमारा सीधा संबंध सामाजिक संबंधों से है। इन संबंधों में परिवर्तन को ही केवल हम सामाजिक परिवर्तन मानेंगे।

मजूमदार: सामाजिक परिवर्तन को हम परिभाषित कर सकते हैं उस नए फैशन या रिवाज़ में जो पुरानों को संशोधित या बदल देता है, मानव के जीवन में या सामाजिक क्रिया में।

मेरिल और एल्डरेज: सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है कि बहुत सारे लोग जो गतिविधियाँ कर रहे हैं जो उनके पूर्वजों द्वारा कुछ समय पूर्व की गई गतिविधियों से भिन्न है।

स्मल्सर, नील; सामाजिक परिवर्तन समाज को संगठित करने के तरीकों में बदलाव लाता है।

सामाजिक परिवर्तन की परिभाषाओं से सामने आने वाले महत्वपूर्ण तथ्य हैं:

1) सामाजिक परिवर्तन किसी निश्चित कारण का प्रभाव है।
2) सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक संरचना, सामाजिक संगठन और सामाजिक क्रियाविधि को संशोधित करता है।
3) यह लोगों की जीवन पद्धति को संशोधित करता है।
4) तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन से भिन्न हैं।
5) सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवहार, सामाजिक मूल्यों और जीवनयापन के तरीकों के माध्यम से परिलक्षित होता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

4.3 सामाजिक उन्नति और सामाजिक विकास की अवधारण

सामाजिक उन्नति एक तरह का सापेक्षिक शब्द है, कुछ लोगों के लिए, दैनिक जीवन समाज कार्यकर्त्ता, सामाजिक संबंध, व्यवहार और मूल्यों में परिवर्तन का अर्थ उन्नति है और दूसरों के लिए, सामाजिक परिवर्तन स्थापित सामाजिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों का पतन है। सामाजिक उन्नति का तात्पर्य उन शक्तियों से है जो मानव जीवन को सामाजिक और जैविक रूप में बेहतर बनाती हैं। ज्ञान का विकास, अविष्कार और विभिन्न तकनीकों और उपकरणों का उपयोग से जीवन के स्तर, सामाजिक संबंध, सामाजिक क्रियाविधि, व्यवहार और मूल्यों में संशोधन प्रारंभ होता है। प्रारंभ में उद्विकास और सामाजिक उन्नति को समानार्थी माना जाता था लेकिन बाद में, समाजशास्त्रीयों ने उद्विकास, सामाजिक उद्विकास और सामाजिक उन्नति के बीच अन्तर स्पष्ट किए है।

सामाजिक उद्विकास, उद्विकास का एक पहलू है और सामाजिक उन्नति सामाजिक उद्विकास का एक सहयोगी है। सामाजिक उन्नति की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ हैं।

मैकाइवर और पेज : उन्नति से हम केवल दिशा ही नहीं समझते अपितु किसी अन्तिम उद्देश्य की तरफ दिशा, कुछ आदर्श रूप में सोचे गए लक्ष्य न कि काम में समझे गए कुछ लक्ष्यों की तरफ की दिशा से है।

बरगैस : स्थित पर्यावरण में किसी भी परिवर्तन या अनुकूल, जो किसी व्यक्ति या लोगों के समूह या जीवन के संगठित प्रकार का जीवन को सरल कर देती है, को हम उन्नति कह सकते है।

लुमलेः उन्नति परिवर्तन है, लेकिन यह वांछित या मान्य दिशा में परिवर्तन है, न किसी भी दिशा में।

औगबर्नः उन्नति किसी निश्चित लक्ष्य की तरफ की गति है, जो किसी सामान्य समूह द्वारा दृष्य भविष्य के लिए वांछनीय समझी जाती है।

हौबहाऊसः सामाजिक उन्नति, सामाजिक जीवन की वृद्धि है जिनका संदर्भ उन लक्षणों से है जिससे मानव अपने आप को जोड़ सकता है या तार्किक रूप से मूल्यों को जोड़ सकता है।

मजूमदारः सामाजिक उन्नति निम्नलिखित छः मापदण्डों पर आधारित आन्दोलन हैः

1) मानव के गौरव में वृद्धि;
2) प्रत्येक मानव व्यक्तित्त्व का सम्मान;
3) आध्यात्मिक ज्ञान और सत्य की खोज के लिए हमेशा बढ़ने वाली स्वतंत्रता।
4) निर्माण करने की स्वतंत्रता और ललित कला से मनोरंजन चाहे वह प्रकृति का कार्य हो या साथ में मनुष्य का।
5) एक सामाजिक स्तर जो प्रथम चारों मूल्यों को प्रोत्साहित करता हो।
6) जीवन, स्वतंत्रता, उल्लास को हासिल करने के साथ साथ न्याय और सभी के लिए समानता को प्रोत्साहित करना।

सामाजिक उन्नति के लिए दिए गए वक्तव्यों से निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं :

1) आदर्श रूप में तय किए गए लक्ष्यों की दिशा में गति सामाजिक उन्नति है।
2) सामाजिक उन्नति अनुकूलन की वह चेष्टा है जो उस समय के वातावरण में जीवन को सरल बनाती है।
3) सामाजिक उन्नति किसी भी दिशा में किया गया प्रयास नहीं है।
4) सामाजिक उन्नति वह प्रयास है जो आध्यात्मिकता पर आधारित सामाजिक स्तर, मानव का सम्मान, स्वतंत्रता, नैतिक मूल्यों से भरा सुखी जीवन का निर्माण करती है।
5) सामाजिक उन्नति अनंत है और सामाजिक परिवर्तन उसमें समाहित है।

सामाजिक विकास की अवधारणा सामाजिक उन्नति के आगे का सुधार है। सामाजिक विकास की अवधारणा लम्बे इतिहास पर आधारित है लेकिन इस का तात्कालिक महत्व मुख्यतः निम्नलिखित तीन कारणों की वज़ह से होता हैः

1) उपनिवेशों की स्वतंत्र होने की प्रक्रिया जो बीसवीं सदी में प्रारंभ हुई और दूसरे विश्व युद्ध के बाद तेज़ हो गई।

2) विकसित देशों के साथ बढ़ती चिंता।

3) लोगों और नव स्थापित सरकारों की कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा।

सामाजिक विकास से संबंधित साहित्य का अवलोकन करने पर दो सहसंबंधित परिमाण सामने आते हैं। पहला लोगों की उस क्षमता का विकास करना जिससे वह अपना और समाज के कल्याण के लिए कार्य कर सकें। दूसरा, संस्थाओं में बदलाव लाया जाए जिससे वे सभी स्तर की मानव आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें विशेषतः निम्नतम स्तर की आवश्यकता को प्रकट करने और आवश्यकता को प्राप्त करने के साधनों की बीच के संबंध को बेहतर बनाने की प्रक्रिया के द्वारा ही यह संभव होगा।

सामाजिक विकास एक विस्तृत अवधारणा है जिसका तात्पर्य उन संरचनात्मक परिवर्तनों से है जो समाज की काया पलटने के लिए जानबूझ कर लाए गए हैं। सामाजिक परिवर्तन एक मूल्य–मुक्त, सुस्पष्ट लक्ष्य वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जबकि सामाजिक विकास एक मूल्य युक्त शब्द है जिसका तात्पर्य उस विषयात्मक वक्तव्य से है जो वाँछित दिशा में सामाजिक परिवर्तन लाता है। इसलिए सामाजिक परिवर्तन के लक्ष्य हैं :

1) ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें लोगों के लिए जीवनयापन की स्थितियाँ बेहतर हों। लोग भूख से पीड़ित न हों और उन्हें जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं से वंचित न होना पड़े।

2) क्षेत्रीय असंतुलन और ग्रामीण शहरी विषमताओं को हटाना।

3) ऐसा आधारभूत ढाँचा तैयार करना जिससे लोगों की आधारभूत आवश्यकताएँ सभी स्तर पर पूरी हो सकें, इसमें समाज के गरीब और शोषित वर्ग के लोग भी सम्मिलित हों।

यह विचार संयुक्त राष्ट्र की महा सभा ने विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन (1995) में व्यक्त किए। इस सभा के महत्वपूर्ण तथ्य थेः

1) जनसंख्या के किसी भी समूह को सामाजिक विकास की सीमा के बाहर न रखा जाए।

2) ऐसे संरचनात्मक परिवर्तन किए जाएँ जो सामाजिक विकास के पक्षधर हों और जनसंख्या के सभी वर्गों को सामाजिक विकास की प्रक्रिया में भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाए।

3) सामाजिक समानता का लक्ष्य रखना

4) मानव संसाधन के विकास को उच्च प्राथमिकता देना जिसमें व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण सम्मिलित हों।

यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए कि सामाजिक विकास को प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास को प्राप्त करना आवश्यक है जिसका अर्थ उत्पादकता में वृद्धि से ऊँची विकास दर प्राप्त करना है जो सकल राष्ट्रीय उत्पाद के रूप में नापी जाती है।

सामाजिक विकास की वृहदता को ध्यान में रखते हुए एम.एस.गोरे ने ठीक ही कहा है कि सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरण का विकास है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक उन्नति और सामाजिक विकास में कैसे अन्तर्वती है?

....

....

....

....

4.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक

भौतिक पर्यावरण और सामाजिक परिवर्तन

भौतिक पर्यावरण ही सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण घटना है। भौतिक पर्यावरण में धीमे और तीव्र परिवर्तन होते रहते हैं। तूफान, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी का फटना, आग, मौसम में बदलाव आदि प्रकार की विपत्तियाँ सामाजिक जीवन के प्रकार को निर्धारित करती हैं। वनस्पति और जीव–जन्तुओं की विशिष्टता से उन पर आधारित सामाजिक स्तर का निर्माण करती हैं। भौतिक पर्यावरण ही सभ्यता के विकास को प्रोत्साहित और सीमित करता है। ध्रुवों और रेगिस्तान में सामाजिक जीवन सीमित होगा क्योंकि वहाँ का मौसम मानव के रहने के लिए बहुत कठिन है। भौतिक पर्यावरण द्वारा उत्पन्न शक्ति ही मानव समाज के प्रकार, वृद्धि और परिवर्तन को सुनिश्चित करती है।

कुछ इतिहास कारों का यह मत हैं कि मिश्र और मेसोपोटामिया की महान सभ्यताओं का विनाश प्रतिकूल भौतिक वातावरण की स्थिति के कारण हुआ। मानव जीवन के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ही उसके चारों तरफ मानव समाज की आबादी के लिए सहायक होती है। प्राकृतिक संसाधनों का शोषण होने के पश्चात उनकी कमी से मानव आबादी में विखंडन और परिवर्तन आता है। मानव द्वारा भौतिक वातावरण (पर्यावरण) के दुरूपयोग का परिणाम ग्रीन हाऊस प्रभाव, pollution/पाल्यूशन, पीने योग्य जल की कमी, शहरी क्षेत्र में घर बनाने के लिए जमीन की कमी और इस जैसी कई समस्याएँ हैं।

आज के भारत में, सघन कृषि कार्यों का परिणाम हरित क्रँाति और खाद्यान्नों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता थी लेकिन जिसकी कीमत हमें भूमि की उर्वरता के क्षरण और जल स्तर के नीचे जाने से चुकानी पड़ी। आर्थिक और तकनीकी विकास से परिस्थिति तंत्र को नुकसान हुआ और उसमें असंतुलन आया। भौतिक पर्यावरण में आने वाले आकाल, सूखा, बाढ़, भूंकप से मानव जीवन सुदूर क्षेत्रों में विस्थापित हुआ जिसके परिणाम स्वरूप स्थापित मानव जीवन को कठिनाइयों से जूझना पड़ा। भौतिक पर्यावरण की विपदाएँ मानव को नई जीवन पद्धति बनाने और नए सामाजिक संबंध स्थापित करने के लिए बाध्य करती हैं। यह अब स्पष्ट हो गया है कि भौतिक पर्यावरण के कारक सामाजिक परिवर्तन लाते हैं।

सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक

“डेमोग्राफी” मानव जनसंख्या का अध्ययन है। “डेमोस” (Demos) एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ “लोग” होता है। डेमोग्राफिक कारक जो सामाजिक परिवर्तन लाते हैं वे हैं उत्पादकता, मृत्य, देशान्तर गमन, बदलती हुई आयु संरचना, सैक्स अनुपात, विवाह की

आयु, विवाह की पद्धति, बच्चे जनने की आयु, जीवन की आयु, गर्भ निरोधक का उपयोग, रोग का स्तर और प्रकार। यह सभी कारकों के दूरगामी प्रभाव समाज पर यह दबाव डालते हैं कि अपने सामाजिक और राजनीतिक संस्थान में परिवर्तन लाएँ।

विश्व के विकसित देशों में, जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक है या स्थिर है किन्तु भारत जैसे विकसित राष्ट्र में यह खतरनाक रूप से ऊँची है। दोनों ही स्थितियाँ सामाजिक रूपान्तरण लाती हैं। वो देश जहाँ उत्पादकता (संतानोत्पत्ति) और मृत्यु कम है उनका जीवन स्तर ऊँचा है। और वो देश जहाँ यह दोनों ऊँची है उनका जीवन स्तर नीचा है। वह समाज जहाँ जन्मदर ऊँची है वहाँ, अधिक जनसंख्या, बच्चे और माँ की मृत्यु दर, बाल श्रम, बेरोज़गारी, गाँव से शहर की ओर विस्थापन, सामाजिक जीवन को बनाए रखने के लिए सेवाओं में कमी, परिवारिक हिंसा, विवाह टूटना, अपराध और झुग्गियों इत्यादि से अवरोध उत्पन्न होता है। ऊँची प्रजनन दर को नियंत्रित करने के लिए परिवार कल्याण और नियोजन जैसे उपाय लाए गए हैं। प्रारंभ में, इन उपायों का विरोध हुआ और इन्हें धर्म विरूद्ध और अनैतिक माना जाता था और इन्हें सामाजिक मान्यता काफी समय बीतने के बाद ही मिली। परिवार नियोजन के उपायों की सामाजिक मान्यता की वज़ह से ही छोटे परिवार पर आधारित नए समाज का निर्माण करने के लिए सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया। इसी प्रकार, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, ज्ञान और जानकारी बढ़ने से मृत्यु दर में कमी आयी।

सामाजिक परिवर्तन का एक और जनसांख्यिकी कारक विशेषतः भारत के संदर्भ में लिंग अनुपात का कम होना है। पारंपरिक भारतीय समाज में, महिला भ्रूण का गर्भपात का चलन था क्योंकि लड़कों को वरीयता दी जाती थी। लड़की को ऋणात्मक सम्पत्ति, परिवार पर बोझ माना जाता था। गर्भ परिक्षण से परिचित होने से आधुनिक भारत में स्थिति और बिगड़ गई। लिंग निर्धारित करने वाले परिक्षण का दुरुपयोग बालिका भ्रूण को मारने के लिए किया जाने लगा। इस परीक्षण का दुरुपयोग भारतीय समाज में जंगल की आग की तरह फैला भले ही इस पर Pre-Natal Diagnostic Technique act, 1994 (PNDT, 1994) जन्म–पूर्व नैदानिक तकनीक अधिनियम, 1994 (पीएनडीपी, 1994) के तहत पाबंदी थी। गिरते हुए सैक्स अनुपात से भयानक जनसंख्यात्मक, आर्थिक, सामाजिक और साथ ही राजनीतिक परिणाम होंगे। महिलाओं के विरूद्ध अधिक हिंसा होगी।

सभी समाजों में बदलती हुई आयु संरचना, जिसका कारण लम्बी आयु और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ हैं, का भी दुष्प्रभाव पड़ेगा। भूतकाल में, युवा वर्ग ही जनसंख्या का प्रमुख हिस्सा थे और तुलनात्मक रूप में वृद्ध लोग बहुत कम थे। वृद्ध लोगों की बढ़ती जनसंख्या से हमें और ज्यादा सामाजिक व आर्थिक सहायक तंत्र की आवश्यकता पड़ेगी। गिरता स्वास्थ्य, अकेलापन, एकान्त और उपेक्षित होने की वज़ह से वृद्ध लोग नई सामाजिक समस्या उत्पन्न कर रहे हैं। संक्षिप्त में, हम यह कह सकते है कि पूरा सामाजिक जीवन जनसंख्यात्मक कारणों की वजह से क्रियारत है और उनमें किए गए परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन आएगा।

यह एक स्थापित सत्य है कि मानव का सामाजिक और आर्थिक जीवन एक दूसरे के अभिन्न अंग है। सामाजिक जीवन का आर्थिक पहलू समाज का प्राथमिक लक्षण है। मानव समाज, शिकार और इकट्ठा करने की अवस्था (युग) शुरू होकर विभिन्न युगों से गुजरते हुए वर्तमान युग तक पहुँचा है जिसमें औद्योगिक उत्पादन, व्यापार और वाणिज्य के साथ कृषि उत्पादन और वितरण अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों पर आधारित स्थिति का वर्चस्व है। प्रत्येक आने वाले युग अपने साथ, अपने प्रकार का सामाजिक जीवन, सामाजिक संबंध और समाज कार्य लाया।

ऐन्जल्स ने ठीक ही कहा है कि "सभी सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक विद्रोह का अंतिम कारण व्यक्ति के मस्तिष्क में नहीं ढूँढा गया, बाह्य सत्य और न्याय के लिए बढ़ते हुए परिज्ञान में, लेकिन यह परिवर्तन उत्पादन और विनिमय के प्रकार में ढूढ़ा गया"। मार्क्स ने इस विचार को और विस्तारित करते हुए कहा कि "इन उत्पादक संबंधों का कुल योग समाज में आर्थिक संरचना का निर्माण करता है– वास्तविक आधारशिला, जिस पर न्यायिक और राजनीतिक योग्य संरचना आकार लेती हैं और जिस से एक निश्चित प्रकार की सामाजिक जागरूकता सदृश्य होती है।" प्रचलित आर्थिक तंत्र सामाजिक संबंधों और सामाजिक कार्यों का निर्धारण करता है। उत्पादन के कृषि तंत्र का एक अलग प्रकार का सामाजिक जीवन होता है जब इसकी तुलना हम उत्पादन के औद्योगिक तंत्र से करते हैं। यह देखा गया है कि वो देश जिनकी प्रति व्यक्ति आय अधिक है उनकी जन्म दर कम आय वाले देशों से कम है। चूँकि अधिक आय औद्योगिक, तकनीकी और शैक्षणिक विकास से जुड़ी हुई है, यह तथ्य उस विवाद का समर्थन करता है कि लोग कम बच्चों की इच्छा रखते हैं जब वो समृद्ध होते हैं। गरीब, अशिक्षित, झुग्गी और ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों में जन्मदर अधिक होती है जिसका परिणाम पूरे विश्व में जनसंख्या विस्फोट है।

जीविका प्रदान करने वाली अर्थव्यवस्था में, लोग अपने घर के सामान का उत्पादन, वितरण और उनका उपयोग स्वयं करते हैं, इसकी तुलना में आधुनिक बाज़ार अर्थव्यवस्था में लोग पैसा कमाने के लिए कार्य करते हैं। इसका अर्थ यह है कि कार्य केवल सामाजिक गतिविधि ही नहीं है अपितु आर्थिक गतिविधि भी है। पहले के समय में, गाँव को आत्मनिर्भर इकाई माना जाता था लेकिन बाज़ार अर्थव्यवस्था में पूरा ग्रामीण जीवन बाह्य बाज़ार की शक्ति पर आश्रित हो गया और फलस्वरूप नए सामाजिक स्थिति, सामाजिक मूल्य और सामाजिक सम्बन्ध स्थापित हुए। आधुनिक संसार में, आर्थिक रुकावट के साथ नई तरह की सामाजिक समस्याएँ आती हैं।

सामाजिक परिवर्तन के तकनीकी कारक

तकनीकी परिवर्तनों ने विश्व को एक ग्लोबल ग्राम में परिवर्तित कर दिया है और स्पष्ट सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न किए। उद्योग, कृषि, यातायात, दूरसंचार, ऊर्जा के स्रोत, खाद्य प्रसंस्करण, भवन निर्माण, भौतिक पर्यावरण – में से कोई भी तकनीकी परिवर्तनों के प्रभाव से बच नहीं सका। ज्यादातर सभी तकनीकी परिवर्तन अपने साथ सामाजिक जीवन, व्यवहार पद्धति और सामाजिक जीवन यापन में परिवर्तन लाए।

सामाजिक जीवन पर तकनीकी कारकों के कुछ प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैः

1) परिवार की संस्था में परिवर्तन जैसा की संयुक्त परिवार व्यवस्था से केंद्रीकीय परिवार व्यवस्था तक; महिलाओं को घर के बाहर रोजगार; पति और पत्नी की भूमिका और सम्बन्धों में परिवर्तन; (Courtship) की पद्धति में परिवर्तन; अन्तर जातीय और अधिक आयु में विवाह; तलाक दर में वृद्धि; परिवार का छोटा आकार क्योंकि जन्म नियंत्रण में तकनीकी उपकरणों का उपयोग होता है; सामाजिक नियंत्रण में परिवार की भूमिका में कमी और वृद्धों का तिरस्कार (Neglect) जिसका कारण सामाजिक व्यवहार (attitude) और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन है।

2) सामाजिक स्तरीकरण के मूल आधार में परिवर्तन; जातीय व्यवस्था का रोज़गार और दैनिक रहन–सहन पर घटा हुआ प्रभाव; व्यक्तिवाद का विकास और सामुदायिक जीवन की कमी; मनोरंजन का व्यावसायिकरण; शहरी क्षेत्र की ओर देशान्तरण और मलीन बस्तियों के विकास से सम्बन्धित समस्याएँ; प्रतिस्पर्धा और तेज़ रफ्तार जीवन के परिणामस्वरूप तनाव और (strain); दैनिक जीवन में अंधविश्वासों की घटती भूमिका; भावनात्मक अस्थिरता और कभी–कभी आर्थिक कठिनाई और असुरक्षा।

4.5 सामाजिक व्यवहार, सामाजिक मूल्य और सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक स्थिति और सामाजिक मूल्य अदृश्य हैं– फिर भी वे मानव जीवन के (gamut) को महत्वपूर्ण तरीके से नियंत्रित करते हैं। आधुनिक समय की शब्दावली में, सामाजिक मूल्य और सामाजिक व्यवहार स्थिति मानव समाज की घटनाओं (affairs) को सुचारू रूप से चलाने वाले साफ्टवेयर हैं। सामाजिक स्थिति और सामाजिक मूल्यों का परिणाम सामाजिक संबंध, समाज कार्यकलाप और सामाजिक व्यवहार हैं। सामाजिक परिवर्तन की मान्यता या अवरोध सामाजिक स्थिति और सामाजिक मूल्यों की वज़ह से ही वास्तविक हो पाती है।

सामाजिक व्यवहार एक व्यक्ति, परिस्थिति, संस्था या सामाजिक प्रक्रिया के लिए बहुमूल्य नवाचार है जिससे अन्तः निहित मूल्यों और मान्यताओं की ओर इशारा होता है। सामाजिक व्यवहार सामाजिक संबंधों, सामाजिक व्यवहार और समाज कार्यकलापों द्वारा प्रदर्शित होता है। मैकाइवर और पेजे ने सामाजिक व्यवहार की व्याख्या एक "विलक्षण, जटिल और परिवर्तनशील चेतना के रूप में की है। उसका लगातार सुधार हो रहा है हमारे प्रशिक्षण, हमारे परावर्तन/परछाई, हमारे स्वास्थ्य, सभी प्रकार की परिस्थितियों के द्वारा। जब हम किसी व्यवहार का एक व्यक्ति से सम्बन्ध ठहराते हैं, हम उसके चरित्र का अनुमान केवल कुछ निश्चित बाह्य संकेतों से ही लगा सकते हैं– रूप, भाव/चेष्टा, शब्दों। यह संकेत में सलाह देते है भय की, प्रेम या करूणा की।" मैकाइवर और पेजे ने सामाजिक व्यवहार का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया है जो सामाजिक संबंधों को रोकना, सीमित करना या प्रोत्साहित करना चाहते हैं। तदानुसार, उन्होंने इन व्यवहारों का नामकरण विघटनकारी, रोकने वाला और जोड़ने वाले जैसा किया। ये सामाजिक व्यवहार समाजिक मेलमिलाप की भावना उत्पन्न करती हैं जो प्रदर्शित करती है निम्नता, उच्चता, उदासीनता, जुड़ना या विघटना मैकाइवर और पेजे द्वारा दिया गया सामाजिक स्थिति का विवरण निम्न है।

1) व्यवहार का अर्थ विषय में हीनता की भावना व्यवहार के उद्देश्य की तुलना में :
   - क) विघटनकारीः डर, भय, आतंक, ईर्ष्या, उतावलापन।
   - ख) जोड़ने वालाः सम्मान, आदर्शों की अराधना, प्रतिस्पर्धा।
   - ग) रोकने वालाः भयभीत, सत्कार, पूजा, आस्था, विनम्रता, अधीनता, मर्यादा, असभ्यता

2) व्यवहार जिसका तात्पर्य विषय में श्रेष्ठता की भावना लाना हो :
   - क) विघटनकारीः अरुचि, नफरत, घृणा, घिक्कारना, तिरस्कार, अस्वीकृति, असहिष्णुता, गर्व।
   - ख) जोड़ने वालाः करूणा, रक्षा करना
   - ग) रोकने वालाः गर्व, संरक्षण, सहिष्णुता, सहनशीलता।

3) व्यवहार जो न तो निम्नता और न ही श्रेष्ठता की भावना उत्पन्न करता है लेकिन विषय में उदासीनता की भावना लाता है :
   - क) विघटनकारीः घृणा, नफरत, बैर, भरोसा न करना, शक, द्वेष, क्रूरता।
   - ख) जोड़नेवालाः सहानुभूति, लगाव, भरोसा, नम्रता, प्रेम, मित्रता, नेकी, दयालु, सहायता करना।
   - ग) रोकने वालाः वैमनस्य, प्रतिस्पर्धा, ईष्या।

मैकाइवर और पेज ने यह मत भी व्यक्त किया कि सामाजिक व्यवहार का वर्गीकरण केवल व्याख्यात्मक है थकानेवाला नहीं। "एक व्यवहार किसी व्यक्ति का स्थायी अधिकार नहीं है। यह हमेशा परिवर्तनशील मूल्यांकन है।" इसमें कोई संदेह नहीं कि सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं लेकिन फिर भी जहाँ तक उनकी व्याख्या और व्यावहारिकता का सम्बन्ध है वे एक दूसरे से भिन्न हैं। सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों द्वारा ध्यान में रखे गए विचार हैं जो नैतिकता और उचित सामाजिक व्यवहार के विषय में होते हैं। सामाजिक मूल्य सही और गलत, वाँछित और अवांछित का निर्धारण करते हैं। स्मैलसर ने सामाजिक मूल्यों को परिभाषित कर कहा है "उद्देश्य की तरफ वह सहकारी मत जिसके लिए मानव को प्रयत्न करना चाहिए। ये नैतिक मत का ह्दय होता है।"

सामाजिक मूल्यों के लक्षण हैं :

1) इनको सिद्ध नहीं किया जा सकता।
2) इनको वाँछित माना जाता है।
3) इनको सामाजिक व्यवहार का मार्गदर्शक माना जाता है।
4) ये व्यक्तिगत अनुभव से बढ़ते है
5) जैसे–जैसे अनुभव बढ़ता है इनमें सुधार होता है।
6) ये प्रकृति से विकासशील होते हैं।

आज के समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य हैं :

1) उपलब्धि और सफलता
2) क्रियाशीलता और कार्य
3) नैतिक जिम्मेदारी
4) उन लोगों की चिन्ता जो किसी आपदा की वज़ह से पीड़ित हैं।
5) कार्य कुशलता और अभिमान।
6) उन्नति, भौतिक सुख, आज़ादी और स्वतंत्रता।
7) राष्ट्रीयता, राष्ट्र भक्ति, जनतंत्र और एक व्यक्ति का मूल्य इत्यादि।

सामाजिक परिवर्तन की स्वीकृति और प्रतिरोध

सामाजिक परिवर्तन की स्वीकृति और प्रतिरोध एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी भी खोज की हमेशा बड़े पैमाने पर समीक्षा/समालोचना होती है जिससे सामाजिक परिवर्तन आता है। आधुनिक औद्योगिक समाजों में, सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक मूल्यों में भिन्नता है जो नई पीढ़ी को जीवन के विभिन्न तरीकों का चयन करने या उस समय के सामाजिक व्यवहार के पुर्नव्यवस्थित करने का मौका देती है जो विभिन्न तरीकों से पुरानी पीढ़ी के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विरूद्ध होती है। दो पीढ़ियों में हमेशा अन्तर होता है। सामाजिक परिवर्तन के प्रतिरोध का ऐतिहासिक साक्ष्य है चाहे वह लोगों या समूहों या दोनों के द्वारा हो। सामान्यतः, परिवर्तन का प्रतिरोध आशानुसार है जब लोगों या लोगों के समूह का परिणाम के प्रति विभिन्न अनुमान होगा। लोगों के लिए पुराने तरीकों का उपयोग सरल है नए तरीकों के अनुकूलन की तुलना में। लोग सामाजिक परिवर्तन का प्रतिरोध स्थायित्व, अशिक्षा, अज्ञानता, आर्थिक मूल्य, अपने हितों, जड़ता, जानकारी के आभाव और नई चीजों के भय की भावना की वज़ह से करते हैं। लोग

सामाजिक परिवर्तन का प्रतिरोध इस भय से भी करते हैं कि यह एक समय से सम्मानित मूल्यों और परम्पराओं के विरूद्ध होगा। अन्तर्नस्लीय, अन्तर्देशीय और अन्तधार्मिक जातीय विवाहों का विरोध इसलिए होता है क्योंकि यह स्थापित सामाजिक मूल्यों और परम्पराओं के विरूद्ध होता है। सामाजिक परिवर्तन कुछ प्रमुख उदाहरण आज के विकसित विश्व से भी लिए जा सकते हैंः अमरीका की दास प्रथा को समाप्त करने के लिए एक लम्बा और विध्वंसकारी युद्ध हुआ। नस्लीय समानता का आज भी विरोध हो रहा है। इंग्लैन्ड में, महिला के मताधिकार का विरोध लम्बे समय तक हुआ। इसी तरह, इंग्लैन्ड में रेल परिवहन को प्रारंभिक दिनों में "पहियों पर नर्क" और "पिशाच गाड़ी" कहा जाता था।

भारत में, सती प्रथा का उन्मूलन, बाल विवाह का उन्मूलन, पुत्र की इच्छा, महिला शिक्षा, मानवाधिकार और प्रजातांत्रिक तरीके से कार्य करने का विरोध आज भी होता है। एस. सी.दूबे का भारत के परिवर्तनशील गाँवों का अध्ययन सामाजिक परिवर्तन की स्वीकृति और प्रतिरोध का अच्छा उदाहरण है। दूबे यह दिखाते हैं कि जहाँ तक, तकनीकी अविष्कार, जैसा की संवर्धित बीज, उर्वरक, जानवरों की उन्नत नस्ल और इत्यादि, आसानी, तत्परता, से स्वीकृति मिलती है, विशेषतः जब उनका प्रभाव छोटे समय में दिखता है, उदाहरण के लिए फसलों का अधिक नकद मूल्य। लेकिन, वो अविष्कार जिनका प्रभाव सामाजिक संरचना या सांस्कृतिक मूल्यों पर पड़ता या पड़ सकता था उनका प्रतिरोध हुआ। कुछ नई कृषि तकनीकें, खेती के सहकारी तरीके, सफाई के सुधार वाले तरीके और शिक्षा के उपक्रमों ने लोगों में काफी कम रुचि जगाई और कई स्थितियों में उसका विरोध भी हुआ। दूबे ने यह अवलोकन किया कि लोग नए आविष्कारों को स्वीकृति देने में धीमे और बहुत ही सावधानी रखते है। लेकिन इन अविष्कारों का बहुत स्थायी प्रभाव था जिसके फलस्वरूप सामाजिक जीवन परिवर्तित हुआ। भारतीयों का एक और अति उत्तम उदाहरण है उनका छोटे परिवार और उससे जुड़ी तकनीक के अनुकूलन में सामाजिक परिवर्तन की स्वीकृति और प्रतिरोध।

आधुनिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास स्वतंत्र विचार, निजीकरण और भूमण्डलीयकरण पर आधारित था जो अपने साथ कुछ सामाजिक लहर और सामाजिक आन्दोलन लाया जिसने पारंपरिक भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को आघात पहुँचाया। पारंपरिक सामाजिक संस्थान जैसे संयुक्त परिवार व्यवस्था और जाति प्रथा लोकतंत्रीय समाज के विचार शक्ति, गतिशीलता और सौभाग्य के साथ संयोज्य नहीं थे। सामाजिक परिवर्तन की स्वीकृति और प्रतिरोध एक निरंतर घटना है और यह एक बार होने वाली घटना नहीं है।

सांस्कृतिक पिछड़ापन

सांस्कृतिक पिछड़ेपन की धारणा अमरीकी समाजशास्त्री औगबर्न ने 1922 में दी। औगबर्न ने तकनीकी परिवर्तन का संस्कृति पर असर का अध्ययन किया और पाया कि संस्कृति के बहुत से हिस्से विभिन्नता से परिवर्तित हुए।

औगबर्न ने वर्णन किया कि संस्कृति दो हिस्सों से बनती है; एक भौतिक होता है और दूसरा अभौतिक होता है। भौतिक संस्कृति में निर्मित वस्तुएँ, कारखाने, घर, कार संक्षेप में, सभी भौतिक वस्तुएँ, साथ में अविष्कार और तकनीकी परिवर्तन। अभौतिक संस्कृति के लिए औगबर्न ने अनुकूलित संस्कृति शब्द का उपयोग किया। इसमें, सामाजिक संस्थान जैसे परिवार, धर्म, शिक्षा, अर्थ और राजनीति सम्मिलित है। अभौतिक संस्कृति में रीतियों, लोकचार और लोकरीतियों पर आधारित मूल्य व्यवस्था भी सम्मिलित है।

औगबर्न का मूल विचार है कि अभौतिक संस्कृति भौतिक संस्कृति की तुलना में धीरे धीरे परिवर्तित होती है। धीमी परिवर्तन दर सामाजिक अभ्यास पर आधारित है जिसका समर्थन

धार्मिक समूह, सामाजिक मूल्य और सामाजिक स्थिति करती है। औगबर्न ने एक परिवार का उदाहरण दिया जिसने भौतिक परिवर्तन के साथ कुछ सामंजस्य बनाया। उद्योगों के विकास के साथ कुछ निश्चित निर्माणकारी गतिविधियाँ जैसे बुनाई, साबुन बनाना और रंगना आदि घर से निकल कर कारखानों की व्यवस्था में चला गई। कारखानों को घर के बाहर काम करने वाली काफी महिलाओं की आवश्यकता थी। उसी समय में महिलाओं से यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने पारंपरिक घर की जिम्मेदारी को भी निभाएँ। इसका परिणाम महिला कर्मियों की माँग और उन पर घर पर रहने के दबाव के कारण उनकी माँग में काफी अन्तर आया। इस घटना ने औगबर्न का ध्यान आकृर्षित किया और जिसके लिए उसने सांस्कृतिक पिछड़ेपन शब्द का निर्माण किया, जो भौतिक संस्कृति में परिवर्तन और अनुकूलन संस्कृति की प्रतिक्रिया के बीच का विलम्ब है।

औगबर्न ने यह विचार व्यक्त किया कि समाज के एक हिस्से में परिवर्तन विशेषतः तकनीकी प्रगति समाज के दूसरे हिस्सों में संबंधित परिवर्तन की जरूरत होती है। जब तक ऐसा सामंजस्य नहीं बनता, समाज का उसका कोई निश्चित भाग, को कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सांस्कृतिक पिछड़ेपन का कारण आदतें और जड़त्व है। लोग नए परिवर्तनों के साथ शीघ्रता से अनुकूलित नहीं होते। परिवर्तित होने में जड़त्व भी इस तथ्य के साथ आता है कि आधुनिक समाज में विभिन्न प्रकार के दबाव समूह होते हैं जो अपने विभिन्न हितों की वज़ह से परिवर्तन का विरोध करते हैं। देशान्तरण के सरल नियमों की इच्छा वो लोग रखते हैं जो विकसित देशों में जाना चाहते हैं लेकिन इसका कड़ा विरोध विकसित देश के लोग करते हैं जिन्हें यह भय रहता है कि नए आगमन से उनकी नौकरी छिन जाएगी या उन्हें सामाजिक सहायता देनी पड़ेगी कल्याण कोष और भत्ते के माध्यम से।

सांस्कृतिक पिछड़ापन उत्पन्न कराने वाले बहुत से तकनीकी रूप विकसित नवीनतम इलेक्ट्रानिक उपकरण है और उनका यातायात के उपकरणों, परिवार कल्याण के उपकरणों जैसे गर्भनिरोधक आदि में उपयोग। इनका परिणाम सामाजिक जीवन पर भयंकर आघात है। औगबर्न इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बहुत से और अक्सर होने वाले आधुनिक युग के तकनीकी अविष्कार जो सामाजिक परिवर्तन से पहले घटित होते हैं सांस्कृतिक पिछड़ेपन को प्रक्षेपित करता है। औगबर्न ने जो बीसवीं सदी के प्रारंभ में कहा वह आज भी केवल व्यावहारिक ही नहीं है; अपितु उसका महत्व और अधिक बढ़ गया है।

सामाजिक परिवर्तन की सीमाएँ

सारा उपलब्ध ज्ञान और जानकारी यह संकेत करती हैं कि भौतिक विश्व मानव के आगमन के पहले से ही था। जब से मानव का अस्तित्त्व हुआ, चाहे वो नियोजित था या अवसर से या उद्‌विकास की प्रक्रिया से हुआ, उन्होंने भौतिक पर्यावरण को अपनी बेहतरी के लिए कुशलता से उपयोग किया। इस प्रक्रिया में, मानव ने उपकरणों का अविष्कार किया और तकनीक का विकास अपनी भौतिक व अभौतिक प्रगति के लिए प्रारंभ किया। ये विकास मानव द्वारा अपने अस्तित्त्व को बचाये रखने की मजबूरी, निरंतरता और जीवन को और सुविधायुक्त और प्रसन्न बनाने के लिए हुए मानव ने भौतिक पर्यावरण का कुशलतापूर्वक उपयोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया। इन सभी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं ने मानव समाज का निर्माण किया जो अपनी उत्पत्ति के समय से ही परिवर्तित हो रही है। परिवर्तन जिसका प्रमुख हिस्सा सामाजिक प्रकृति का है किसी अन्य घटना के समान त्रुटि विहीन नहीं है। प्रमुख खामियाँ हैं :

1) सामाजिक परिवर्तन जटिल प्रकृति का होता है।
2) सामाजिक परिवर्तन अनेकात्मक होता है।
3) सामाजिक परिवर्तन कुछ केसों में सामाजिक रूप में अलग कर देता है।
4) सामाजिक परिवर्तन अनिश्चिताएँ लाता है।
5) सामाजिक परिवर्तन कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में विवाद उत्पन्न करता है।
6) कभी–कभी, यह सामाजिक रूप से अलग (विभक्त) कर देता है।
7) सामाजिक परिवर्तन के परिणाम का अनुमान लगाना कठिन है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक परिवर्तन के कारकों की समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

....

4.6 सारांश

पिछले तीन सौ वर्षों के करीब से सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए प्रमुख महत्व का विषय था, विशेषतः समाजशास्त्रियों के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से। कोई भी समाजशास्त्रीय विश्लेषण सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ के बिना अधूरा है। यह समाज के संस्थागत और आदेशात्मक संरचना का परिवर्तन है। सामाजिक उद्विकास, सामाजिक उन्नति, सामाजिक विकास, भौतिक वातावरण में परिवर्तन, तकनीकी विकास, अविष्कारों, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं में परिवर्तन आदि सभी का सामाजिक परिवर्तन पर असर होता है। सामाजिक परिवर्तन सभी भौतिक और सामाजिक पर्यावरण के परिवर्तन में विद्यमान होता है। सामाजिक परिवर्तन के सारांश में मैकाइवर और पेजे ने सही ही कहा है कि "सामाजिक परिवर्तन को समय के उपद्रव से सुरक्षित रखने के लिए संग्रहालय में नहीं रखा जा सकता।"

4.7 शब्दावली

अनुकूलित संस्कृति : औगबर्न द्वारा अभौतिक संस्कृति, सामाजिक संस्थानों, मूल्य व्यवस्था और राजनीतिक संस्थानों का सम्मिलित शब्द।

उर्वरता : एक महिला द्वारा अपने जीवन काल में उत्पन्न की गई संतानें।

मानव समाज : एक भौगोलिक इकाई में रहने वाले लोग जो एक न्यायिक व्यवस्था से जुड़ें हों और उसकी एक निश्चित राष्ट्रीय पहचान हो।

जड़त्व : क्रिया, गति या परिवर्तन को करने की अरुचि।

देशान्तरगमन : लोगों या समूहों का सांकेतिक या राजनीतिक सीमाओं की दोनों ओर अवागमन

अस्वस्थता : रोग की दर या एक समाज या समुदाय में रोगी व्यक्तियों का अनुपात

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ब्रॉउन, एल. सेल्जमिक, पी. और डेलरॉक, डी. वी., (1981), *सोशलॉजीः ए टेक्स विद ए एडाप्टीव वीडिंग* हारपर और रॉव पब्लिशर्स, न्यूयार्क।

बोटोमोर, टी.वी, (1995), *सोशलॉजीः ए गाइड टु प्रोब्लम्स और लिटरेचर*, ब्लैकी और संस (इंडिया) लिमिहेद, मुम्बई।

डेविस किंसले, (1950), *हयूमन सोसाइटी*, दि मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, न्यूयार्क।

गिंसबर्ग (1949), मोरीस *स्टैडीज इन सोशलाजी*, लंदन।

जॉइसन, एच एम (1984), *सोशलाजी*, अल्लाइड पब्लिशर्स, मुम्बई।

कोइनिंग आर.एम और पेजे, सी.एच (1996), *सोसाइटी एन इंटरोडक्शन अनालिसिस*, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली।

ओजबर्न, डब्ल्यू एफ और निमकॉफ (1960), *ए हैंड बुक आफ सोशलाजी*, रूटलेज और केगद पॉल, लंदन।

स्मेलसर, नील. जे. (1993), *सोशलाजी*, प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक और सतत् सामाजिक घटना है। सामाजिक परिवर्तन की दर विभिन्न समाजों में, विभिन्न समय में विभिन्न हो सकती है लेकिन मानव समाज का स्थायित्व एक भ्रम है। ऐतिहासिक साक्ष्य यह प्रकट करते हैं कि सभी प्रकार का सामाजिक जीवन, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्यों में समय के साथ बहुत अधिक परिवर्तन आए हैं। मानव समाज हमेशा गतिशील, परिवर्तन की प्रक्रिया में, क्षरण, पुननिर्माण और अपना सामंजस्य नए विचारों, अविष्कारों और रहन सहन के तरीकों से करता रहता है।

   सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संरचना, सामाजिक तंत्र और लोगों की जीवन पद्धति में सुधार या बदलाव है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवहार सामाजिक मूल्यों और जीवन यापन के नए तरीकों, सामाजिक संबंधों और सामाजिक अंतःक्रियाओं से समाज के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित होता है। सामाजिक परिवर्तन एक जटिल, असीमित और मूल्य–उदासीन प्रक्रिया है।

बोध प्रश्न II

1) प्रारंभ में उद्विकास चाहे जैविक हो या सामाजिक उसने मानव का ध्यान आकर्षित किया। दोनों प्रकार के उद्विकास के मध्य का अन्तर ज्ञान के विकास और विचार संरचना में परिशोधन से स्पष्ट हुआ। उन्नीसवीं सदी के दौरान, सामाजिक उद्विकास

के साथ सामाजिक उन्नति की अवधारण जोड़ी गई और बीसवीं सदी के दौरान सामाजिक जीवन के विश्लेषण से इसकी समझ में और सुधार हुआ और सामाजिक विकास की अवधारणा को पहचाना गया। सामाजिक विकास की अवधारणा सामाजिक उन्नति की अवधारणा से ज्यादा वृहद है। इसमें कोई संदेह नहीं की सामाजिक उन्नति के द्वारा सामाजिक विकास में परिवर्तन एक दिशा में वांछित है लेकिन कार्य पद्धति और परिणाम भिन्न होते हैं।

सामाजिक उन्नति सामाजिक परिवर्तन का एक उदासीन परिणाम हो सकता है लेकिन सामाजिक विकास पूर्व–नियोजित उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक प्रयास है। सामाजिक परिवर्तन की तरह, सामाजिक उन्नति भी मूल्य मुक्त हो सकती है जबकि सामाजिक विकास एक मूल्य–युक्त सामाजिक घटना है। सामाजिक विकास समाज में जानबूझ कर रूपांतरण लाने वाले लक्ष्य पर केन्द्रित गतिविधि है। सामाजिक विकास का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज में कोई भी भूख से पीड़ित न हो और जीवन की मौलिक आवश्यकताओं से कोई भी वंचित न हो। सामाजिक विकास की आवश्यकता एक ऐसा ढाँचा बनाने में होती हैं जहाँ किसी के साथ शोषण, अन्याय, भेदभाव, सामाजिक विषमता, ग्रामीण–शहरी और क्षेत्रीय विषमताएँ न हों।

आर्थिक विकास सामाजिक उन्नति और सामाजिक विकास का अभिन्न अंग है। आर्थिक विकास उत्पादन के सभी क्षेत्रों में वृद्धि है जिससे विकास की ऊँची दर प्राप्त होती है। उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए मानव संसाधन का विकास व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण के द्वारा करना होगा। यह सब एक अन्तर संबंधित घटना की तरफ इशारा करता है। एम.एस.गोरे के शब्दों में "शब्दों में "सामाजिक विकास एक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरण का विकास है।" इन सभी क्षेत्रों में विकास बेहतर जीवन सुनिश्चित करता है।

बोध प्रश्न III

1) भौतिक पर्यावरण, तकनीक, आर्थिक विकास और जनसंख्यात्मक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन लाते हैं। इन क्षेत्रों में सतत् विकास हो रहा है जिसका परिणाम सामाजिक परिवर्तन है। जैसे कि सामाजिक परिवर्तन का अनुमान लगाना कठिन है, वैसे ही यह भी कहना बहुत कठिन है कि सामाजिक परिवर्तन में कौन सा कारण अधिक महत्वपूर्ण है। ये सभी कारक व्यक्तिगत रूप में और साथ ही सामूहिक रूप में सामाजिक जीवन, सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक संबंधों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करते हैं जिसका परिणाम सामाजिक परिवर्तन होता है।

भौतिक पर्यावरण सामाजिक जीवन की वृद्धि को प्रोत्साहित और सीमित करता है जैसा कि ध्रुवों, रेगिस्तानों और हिमाच्छ्दित पर्वतों के सामाजिक जीवन की पद्धति से स्पष्ट होता है। इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण है मिस्र और मेसोपोटामिया की महान सभ्यताएँ प्रतिकूल भौतिक पर्यावरण की वज़ह से नष्ट हो गई। भौतिक वातावरण विभिन्न प्रकार की विपत्तियों, विपदाओं, विस्फोटों से परिवर्तित हो जीवन के नयी पद्धति, सामाजिक संबंधों, सामाजिक व्यवहारों सामाजिक मूल्यों से संबंधित आपदा प्रबंधन की उपसंस्कृति उत्पन्न करता है।

मानव का सामाजिक और आर्थिक जीवन एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। मानव समाज के विकास में शिकार और इकट्ठा करने वाले युग से उत्पादन और वितरण के नवीनतम साधन अपने साथ अपनी ही प्रकार के सामाजिक और आर्थिक

जीवन को लाए। यह तथ्य बहुत से सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा रेखांकित किया गया है विशेषतः एन्जिल्स और मार्क्स। मानव जो कार्य करता हैं उसी के अनुसार वे अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन का निर्माण करता हैं। दुनिया भर के रूझान यह दिखाते हैं कि आर्थिक रूप से समृद्ध लोगों में प्रजनन दर कम होती है। आर्थिक सम्पन्नता औद्योगिक विकास जो तकनीकी और शैक्षिक उपलब्धियों से ही सुनिश्चित होता है। गरीब और अशक्षित लोग जो मलीन बस्तियों और गाँवों में रहते हैं उनमें अक्सर अधिक प्रजनन दर पायी जाती है। रहन–सहन का स्तर आर्थिक कारणों पर निर्भर करता है।

तकनीकी कारक जिससे आर्थिक विकास की गति तेज़ हुई इसने संसार को अन्तर्राष्ट्रीय गाँव में परिवर्तित कर दिया है, जिससे सामाजिक जीवन में बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जो तकनीकी परिवर्तन से प्रभावित न हुआ हो। तकनीक ने मानव के सम्पूर्ण सामाजिक जवीन को प्रभावित किया है। तकनीकी विकास की वज़ह से औद्योगिकरण और शहरीकरण हुआ जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन की सभी सामाजिक संस्थाओं में तीव्र गति से परिवर्तन हुए।

जनसंख्यात्मक अध्ययन से यह प्रकट हुआ है कि प्रजनन, मृत्यु, लिंग अनुपात, आयु संरचना में परिवर्तन, विवाह की आयु, विवाह और देशान्तरण जैसे कारक भी सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। गर्भ निरोधक तकनीक और उसके उपयोग का समाज पर बहुत दूर गामी प्रभाव पड़ा। जिन समाजों में प्रजनन दर अधिक थी वो जनसंख्या, बेरोज़गारी, बाल मज़दूर, देशान्तरण, पारिवारिक हिंसा, तलाक और बच्चों की अधिक मृत्यु दर से पीड़ित है। वृद्ध लोगों की संख्या में वृद्धि से हमें बड़े और मजबूत सामाजिक और आर्थिक सहायता व्यवस्था की आवश्यकता पड़ेगी जिससे अकेलेपन, हिंसा और स्वास्थ्य पर निगरानी रखी जा सके। मानव द्वारा अपनाया गया छोटे परिवार के तरीके ने पूरे विश्व के जनसंख्यात्मक और सामाजिक पर्यावरण में परिवर्तित कर दिया है।